

चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय अनुशीलन का अध्ययन

कुमारी भावना पाण्डेय (शोध छात्रा)

डा० धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)

विषय हिन्दी कला विभाग, फैकल्टी ऑफ मानविकी मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़

सारांश, इनके बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' के लिए उन्हें व्यास सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उन्हें इंदु शर्मा कथा सम्मान, साहित्य भूषण, वीर सिंह देव सम्मान मिल चुका है। साहित्य अकादमी ने अपने प्रतिष्ठित वार्षिक पुरस्कारों की बुधवार को घोषणा की। अकादमी ने हिन्दी में चित्रा मुद्गल, अंग्रेजी में अनीस सलीम, उर्दू में रहमान अब्बास, संस्कृत में रमाकांत शुक्ल और पंजाबी में मोहनजीत समेत कुल 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार देने का एलान किया। नारी को समाज द्वारा परिवार के द्वारा अत्याचार भोगना पड़ता है। इस विषय को लेकर प्रस्तुत कहानी निर्मित है। 'अभी भी' कहानी के मुख्य पात्र हैं शिल्पा, मुकेश, सुरेश, अनिल, मीरा, शिवा, घर की माँ बीजी आदि। बीजी को अपने बच्चों के प्रति बहुत प्यार था। वह उनकी देखभाल अच्छी तरह करती थी। नगरपालिका के स्कूल में बीजी अध्यापन का कार्य करती थी। बीजी के चार बच्चे थे। बीजी का बड़ा बेटा था मुकेश। वह पाएलेट का काम करता था। जब मुकेश का विवाह शिल्पा से हुआ तो शिल्पा पति के साथ मुंबई शहर में आई। वहाँ मुकेश के परिवार से उसका मिलना— जुलना हुआ था। माँ बीजी, देवर सुरेश और अनिल, ननद सब शिल्पा के लिए आत्मीय और खुश मिजाज लगे। मंझला बेटा सुरेश जीवन बीमा निगम में काम करता था। छोटा बेटा अनिल कॉलेज की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद छोटे मोटे व्यवसाय की योजना कर रहा था। मुकेश और शिल्पा के विवाह के छह महीने के बाद अनिल ने मीरा से प्रेम विवाह किया और घर ले आया। मुकेश की माँ बीजी को यह अच्छा नहीं लगा था। लेकिन मुकेश ने अपनी माँ को पत्र लिखा कि जो हो गया उसे स्वीकार करो इसी में समझदारी है।

मुख्य शब्द, आवां, अपनी वापसी, नारी प्रश्न, भारतीय भाषा आदि।

प्रस्तावना, एक दिन एक दुर्घटना में मुकेश की मृत्यु हुई। तब से शिल्पा का जीवन दुःख भरा बन गया था वह विचार करती है। मुकेश के संग बीते वर्ष किसी लंबे मादक सपने की तरंग से गुजर गये सपना ही तो था घनी पीड़ा के दबाव से शिल्पा दुःखित हुई। बहन शिवा ने ब्याह के आलबम उलट पलटकर कुछ कहा तो शिल्पा रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुनकर सब दुःखित हुए एक महीने के बाद शिल्पा के पिताजी बीजी के घर आए और वह शिल्पा को अपने घर ले जाने का विचार रखते हैं। छोटा भाई और बहनों के साथ रहने पर उसका दुःख हलका बन जाएगा।

अगर कोई नौकरी मिली तो उसकी हालात में सुधार आएगी। लेकिन बीजी ने रोका और शिल्पा के पिता के सामने शिल्पा और देवर सुरेश के बीच के विवाह का प्रस्ताव रखा नौकरी करने से कोई लाभ नहीं है। बीजी ने कहा। इस प्रकार देवर सुरेश और शिल्पा का विवाह हो जाता है। मुकेश और शिल्पा के रिश्ते में एक बच्चा हुआ था जिसका नाम है किशु। वह शिल्पा के साथ रहता था। मुकेश के जायदाद में काफी धन था और वह सब शिल्पा के नाम पर था। मुंबई उपनगर की सोसाइटी में मुकेश ने शिल्पा के नाम से एक घर भी खरीदा था। विवाह के बाद मालूम हुआ कि सुरेश को अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है। अनिल भी शिल्पा से चौक में दस्तखत करने के लिए मजबूर करते थे। अब शिल्पा का धन पाँच लाख से केवल सवा डेढ़ लाख में सीमित हो गई। अनिल एक दूकान

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन, शोधार्थिनी ने इस शोध पत्र पर कार्य करने के साथ ही इन शोध पुस्तकों का गहन अध्ययन इस प्रकार किया है।

के. वनजा, (2016) चित्रा मुद्गल एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स इस उपन्यास में उपन्यासकार एक ओर बाजारीकरण के दौर में विज्ञापन का स्थान और उसके साथ जुड़ी ज्यादातियाँ, छलकपट आदि की बाल की खाल निकालती हैं तो दूसरी ओर स्त्री शरीर को विज्ञापनबाजी का उपकरण बनाने वाली जो संस्कृति पनप रही है, इसका संजीदगी से बयान करती है। इस उपन्यास में एक ओर पारिवारिक जीवन की ऊष्मा है तो दूसरी ओर संबंधों की टूटन भी। राजी सेठ स्त्री की दो प्रकृतियों में अंतर कुछ इस तरह बताती हैं "एक है, स्त्री की मूल प्रकृति और दूसरी है, समाज द्वारा बनायीं उसकी आकृति।

सुधा उपाध्याय, (2016) मानवीय संरचना के खंडित मूल्य, चित्रा जी ने समकालीन जीवन के दवाबों व तनावों को पूरी संजीदगी से अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। बदलते परिवेश में मानवीय संबंधों में आई शिथिलता के साथ चित्रा जी निम्न वर्गीय समाज के सजीव यथार्थ को भी अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे समक्ष रखती हैं। डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में 'चित्रा मुद्गल की कहानियाँ भी जीवन के विविध आयामों को उद्घाटित करती हैं।

सेठ राजी, (2015) इक्कीसवीं सदी की ओर, यही नहीं चित्रा जी द्वारा इस उपन्यास में अपने पात्रों के माध्यम से स्त्री-पुरुष के संबंधों से संबंधित कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया है। उदहारण के लिए अंकिता द्वारा पति सुधांशु को कहे जाने वाला यह कथन कई परतें खोलता है 'सुधांशुजी औरत बोनसाई का पौधा नहीं, जब जी चाहा, उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया, वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी कर सकती है।'

शोध के उद्देश्य, इस शोध को पूरा करने के लिये मेरे द्वारा निम्न शोध उद्देश्य तैयार किये गये हैं, जो इस प्रकार है।

1. चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री विमर्श की अवधारणा को ज्ञात करना

2. चित्रा मुद्गल की कहानियों में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं को ज्ञात करना
3. चित्रा मुद्गल की कहानियों में महानगरीय स्त्री जीवन बोध को ज्ञात करना

शोध प्रश्न, इस शोध को पूरा करने के लिए जो प्रश्न मेरे सामने आयेगें में उनका उत्तर अपने इस शोध की आवश्यकता अनुसार उत्तर खोजने का प्रयास मेरे द्वारा किया जायेगा।

1. चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री जीवन का यथार्थ स्वरूप क्या है ?
2. चित्रा मुद्गल की कहानियों में वृद्धों की संवेदना का स्वरूप क्या है ?
3. चित्रा मुद्गल की कहानियों में निम्नवर्गीय समाज के स्वरूप क्या रहेगा ?

शोध विधि, अधिकतर साहित्यकारों के आधार पर हिन्दी साहित्य में आंकड़े उलझे ही होते हैं जैसे चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना : एक अनुशीलन साहित्यिक अध्ययन के समकालीन समय को शोधार्थिनी ने देखा तो नहीं है इसीलिये वह पूरी तरह से उसी साहित्य और कविताओं पर ही मुझे निर्भर रहना है। जो चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना समकालीन समय में साहित्यकारों ने जो लिखा है। इस साहित्य में चित्रा मुद्गल की कहानियों की सच्चाई भी हो सकती जो ऐसे कई हिन्दी साहित्य पुरातात्विक और अब तक अज्ञात अनेक कवियों की कविताएँ भी मिल सकती हैं जिनके गहन अध्ययन और विचार विमर्श के बाद जो सत्यता प्रकट होगी उसी को मैं इस शोध में यथास्थान वर्णित करूंगी। **इसीलिए इस शोध में शोधार्थिनी द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।** क्योंकि यह शोध पूरी तरह से चित्रा मुद्गल जी की कहानियों पर ही आधारित होगा इस शोध को और अधिक विश्वसनीय बनाने में अपने मंगलायतन विश्वविद्यालय बेंसवां, डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालयों के साथ-साथ में दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय आदि में उपलब्ध चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना की साहित्यिक सामग्री बड़ी ही महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। साहित्यिक सामग्री से भी मैं इस शोध के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को एकत्रित करने में बहुत ही मदद मिल सकती है। ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

शोध अध्ययन का महत्व, वह प्रतिदिन मानसिक अंतर्द्वन्द्व, अत्याचार, पिटाई के शिकार बन जाती है। उसकी सास भी उससे बुरा व्यवहार करती है। सास को अपना बड़ा बेटे मुकेश के धन संपत्ति हड़पने का विचार था। न कि बहु के अच्छे भविष्य की चिंता। शिल्पा अपने पति के परिवार से अनेक अत्याचार पीड़ादायक अनुभव भोगती है वह पति के घर से आखिर विचार करती है कि क्यों पड़ी है यहाँ, जीवित ही क्यों है? जीवन जीने के लिए ही होता है, होता होगा। जीने के नाम पर जो जीवन उसे सौंपा गया है पिछले पाँच वर्षों से उसे मंझा-मंझाकर उसका रोयाँ निचुड़ चुका है। समाजिक परिवारिक सुरक्षा शिल्पा को नहीं मिली। वह पढ़ी लिखी युवती है नौकरी कर सकती थी। क्यों कठपुतली बनकर जीवन बिताये वह सोचती है। वह आत्मनिर्भर बन सकती थी अपने को मोह विमुक्त होकर बाहर निकलना है इस प्रकार वह अपने अनुभवों से नई सबक प्राप्त करती है। पति के घर छोड़ देने का निर्णय करती है। और आत्मनिर्भर युवती बनना चाहती है। वह अपने पिता से कहती भी है, मुझे जीवित देखना चाहते हैं तो यहाँ से फोरन निकाल ले

चलिए। अभी भी वक्त है अभी भी यहाँ कहानी का शीर्षक “अभी भी” सार्थक है। शिल्पा के जीवन खतरे में हैं यही सूचना है इस कहानी की भाषा उत्कृष्ट तथा प्रौढ़ है। नये नये शब्दों का चयन करके कहानी को स्तरीय बनाया गया है वार्तालाप या संवाद में भी चुस्तता सुन्दरता है।

भारतीय लेखिका चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदनाओं को इस तरह से दिखाया गया है। चित्रा मुद्गल की कहानियों में समाज के हर वर्ग के शोषक और शोषितों को दिखाया गया है, उन्होंने नारी की दयनीय स्थिति को देखकर नारी के अधिकारों के लिए आवाज उठाई है, उन्होंने नारी के सामाजिक, आर्थिक, परिवारिक, और स्त्री-पुरुष संबंधी समस्याओं पर गहराई से विचार किया है, उन्होंने अपने आस-पास हो रहे नारी के शोषण को अपने कहानी में यथावत दर्शाया है, उन्होंने किन्नरों के दर्द को भी अपनी कहानियों में दिखाया है, उन्होंने एक जमीन अपनी उपन्यास में विज्ञापन की दुनिया में फंसी महिलाओं की स्थिति को दिखाया है, उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण परिवेश से लेकर आधुनिकता तक के स्त्री शक्ति मूल्य को दिखाया है। उन्होंने पारिवारिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, और आर्थिक जीवन मूल्यों पर विचार किया है

आवां उपन्यास की एक उल्लेखनीय बात यह है कि पूरा उपन्यास सृजन का एक प्रतीकात्मक रूप है। इसका प्रत्येक पात्र एक प्रतीक है, अन्ना साहब की मृत्यु, नमिता के गर्भ का गिरना, नमिता की वापसी, उपन्यास का ट्रेन यात्रा से शुरू होकर ट्रेन यात्रा में समाप्त होना, ये सब उपन्यास को प्रतीकात्मक बनाते हैं। प्रत्येक महान रचनाकार की अपनी एक आत्मदृष्टि होती है। चित्रा जी की आत्मदृष्टि का परिणाम है यह प्रतीकात्मक उपन्यास। आवां एक महाकाव्यात्मक ऐतिहासिक उपन्यास है क्योंकि यह कथा हमारे इतिहास की है और अनेक कथाओं एवं उपकथाओं को पिरोकर एक संतुलित महाकथा की सृष्टि करती है। ‘स्त्री अस्तित्व संघर्ष की दृष्टि से चित्रा मुद्गल का दूसरा उपन्यास ‘आवां’ भी महत्वपूर्ण है। बाजारीकृत समाज में स्त्री का अस्तित्वहरण जिस पैमाने पर हो रहा है उसका जटिल अनुभव बोध ‘आवां’ के पठन-पुनः पठन से परत-दर-परत खुलते रहते हैं। ‘आवां’ में आवां उस जलती भट्टी का प्रतीक है, स्वत्व संघर्ष की ज्वाला का प्रतीक है जिसमें स्त्री अपने को तपा-गढ़ाकर नए रूप में परिभाषित करने के लिए बाध्य है।’

गिलिगडु चित्रा जी के उपन्यास है। इसमें उन्होंने वृद्धों के मनोविज्ञान को आधार बनाकर नई पीढ़ी द्वारा उनके प्रति होने वाले दुर्व्यवहार का चित्रण किया गया है, जो लेखिका के व्यापक और प्रौढ़ अनुभव का प्रमाण है। डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में, ‘गिलिगडु दो वृद्धों की कथा है, जो सैर के समय प्रातः अनायास मिलते हैं और एक-दूसरे में अपनी संवेदना और स्वरूप का प्रतिबिम्ब ढूँढते हुए आत्मीयता का तरल संस्पर्श पाकर अंतरंग मित्र बन जाते हैं। साथ-साथ दिल्ली-दर्शन, खरीददारी, रेस्तरां में डिनर, सैर के अतिरिक्त उनकी साझी जिंदगी में शामिल हो जाने वाले ये कुछ अविस्मरणीय पल हैं, जिनके साथ अपने-अपने राज खोलती भावुक सरलताएँ जुड़ी हैं। इतना होते हुए भी दोनों की दुनिया बिल्कुल अलग है।’

चित्रा जी ने समकालीन जीवन के दबावों व तनावों को पूरी संजीदगी से अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। बदलते परिवेश में मानवीय संबंधों में आई शिथिलता के साथ चित्रा जी निम्न वर्गीय समाज के सजीव यथार्थ को भी अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे समक्ष रखती हैं। डॉ.गोरक्ष थोरात के शब्दों में 'चित्रा मुद्गल की कहानियाँ भी जीवन के विविध आयामों को उद्घाटित करती हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक परम्पराओं तथा रूढ़ियों पर तेज प्रहार करने के साथ-साथ समाज में फैला शोषण, समाज में स्त्री की स्थिति, स्त्री के प्रति पुरुषों की मानसिकता, पुरुषों का स्त्री की लेकर प्रकाश में आता दोगला चरित्र, श्री जीवन की अपनी समस्याएँ आदि कई आयामों को छूती और अन्तर्मुख करती हैं। चित्रा मुद्गल की कहानियों के बारे में कहा जाता है कि वे श्री जाति की पक्षधर हैं। वास्तव में उनकी कहानियों में न स्त्री प्रमुख है न पुरुष बल्कि उनमें मनुष्य प्रमुख है।' भारतीय जीवन की आधारशिला के रूप में पारिवारिक जीवन को देखने वाली चित्रा जी समकालीन जीवन में उसके मूल्य विघटन को सजीवता से अपनी कहानियों में व्यक्त करती हैं। उनकी कहानियों का विषय समाज में उपस्थित प्रत्येक उच्च, निम्न व मध्यवर्गीय शोषक-शोषित वर्ग है। मानव ही नहीं उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से बाल मोविज्ञान एवं जीव-जंतुओं से संबंधित हर उस प्रश्न को उजागर किया है जो आज के समाज में आवश्यक हो चला है।

एक सच्ची समाज सेविका की छाया उनकी कहानियों में प्रतिबिंबित होती है। वह अपनी सर्जनात्मकता के विषय में स्वयं भी कहती है कि वे अपनी चेतना की अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं के माध्यम से करती हैं। कहना न होगा कि 'समकालीन जीवन के दबावों एवं तनावों को पूरी संजीदगी के साथ उनकी कहानियाँ पेश करती हैं। बदलते परिवेश में मानवीय संबंधों में जो शिथिलता आ गई, उसका खुलासा एक ओर है तो दूसरी ओर निम्नवर्गीय जीवन का यथार्थ है। पारिवारिक जीवन के सुदृढ़ संबंधों को भारतीयता की आधारशिला मानने वाली चित्राजी उसमें आ गई टूटन को समकालीन मूल्य विघटन मात्र मानती हैं। शोषण के शिकार बनने वाले स्त्री वर्ग, मजदूर वर्ग, अपने अधिकारों से वंचित लोग, कई प्रकार से ताड़ित-प्रताड़ित लोग, इन सबको उजागर करने का अथक प्रयास उनकी कहानी की खासियत है।'

चित्रा जी की कुछ महत्वपूर्ण कहानियों को यहाँ उल्लेखित किया जा रहा है। चित्रा जी की 'गेंद' कहानी के केंद्र में समकालीन समाज के महत्वपूर्ण पहलु रखे गए हैं। पहला, सचदेव जी के माध्यम से वृद्धों की समस्या को दर्शाया गया है तो दूसरी ओर एक बालक का चित्रण किया गया है जो एक कामकाजी माता-पिता की संतान है। बालक को घर में बंद करके रखा जाता है जो बाहर गेंद जाने पर सचदेव जी से गेंद वापस कमरे के अंदर देने के लिए सहायता मांगता है। वहीं सचदेव जी अपनी उम्र के तकाजे के चलते अपनी श्रवण शक्ति खो बैठे हैं। जिसके इलाज के लिए वह अपने बेटे से तार भेजकर पैसे मांगने पर विवश है। अपनी सारी संपत्ति अपने बच्चों के नाम करने के बाद वृद्ध माता-पिता की स्थिति को यहाँ बहुत ही मार्मिक तरीके से व्यक्त किया गया है।

ऐसे में परिवार चलने का कोई दूसरा स्रोत न होने पर असलम बीमार घोड़ी को लेकर ही सवारी के लिए निकल जाता है। जिस कारण घोड़ी एक गाड़ी से टकरा जाती है। असलम इस घटना का लाभ उठाते हुए गाड़ी चला रही महिला से पैसा वसूल कर सरवरी को उसी हालत में छोड़ भाग जाता है। 'जंगल' कहानी में घरों में पाले जाने वाले जानवरों की दशा की ओर चित्रा जी हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इस कहानी में एक बालक के माध्यम से चित्रा जी एक तरफ तो बाल-मनोविज्ञान का मार्मिक चित्रण करती है दूसरी ओर घर में पाले जाने वाले पशुओं की दशा भी प्रस्तुत करती है। चित्रा जी की 'भूख' कहानी एक अत्यंत संवेदनात्मक विषय पाठकों के समक्ष रखती है। गरीबी की मार से पीड़ित व्यक्ति अपना पेट भरने के लिए क्या कुछ करने पर विवश हो जाता है इस कहानी में चित्रित है। समकालीन समाज की सबसे बड़ी विडंबना है कि मनुष्य अपनी भूख के आगे इतना विवश होकर एक शिशु को आमदनी के लिए साधन स्वरूप उपयोग में लेने लगा है।

निष्कर्ष, साहित्य में अपना नाम कमाने वाली एक लेखिका जब एक संपादक की पत्नी हो जाती है तो उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयों को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। वह लिखती है कि किसी भी लेखिका को किसी भी संपादक की पत्नी नहीं होना चाहिए। चित्रा मुद्गल के संपूर्ण कथा साहित्य का कलेवर विषय की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। समाज में उपस्थित तत्कालीन समस्याओं को चित्रा जी अपने साहित्य में स्थान प्रदान करती हैं। समाज के जिन गाढ़े सच की ओर सामान्यतः आम आदमी देखकर भी मुँह फेर लेता है, या उसे अनदेखा कर देता है, उसे चित्रा जी द्वारा अपने साहित्य में पूरी सच्चाई के साथ प्रदर्शित किया गया है। उनका साहित्य समकालीन साहित्य में रचे जा रहे साहित्य में एक विशेष एवं गंभीर स्थान रखता है जो पाठक को अपने समाज एवं साहित्य के विषय में सोचने पर मजबूर कर देता है। अंत के वनजा के इस कथन से करना गलत न होगा कि 'चित्राजी के कथा साहित्य के अध्ययन के उपरान्त मुझे मालूम हुआ कि मानवीयता उनकी छाप है। वे जीवन के सत्य की खोज अपनी रचनाओं के जरिये करती आ रही हैं। सच को सच बोलने और झूठ को झूठ बोलने के लिए कबीर उनके गुरु रहे। उनसे प्रेरणा पाकर निर्भीक होकर निरंतर अपनी साहित्यिक साधना में वे लीन रही हैं। आम आदमी की हमदम चित्राजी की रचनाओं का प्रतिमान स्नेह से उत्प्रेरित मानवीयता है या यों कहिए कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई फर्क नजर नहीं आता। ऐसे रचनाकार साहित्य जगत में विरले ही दिखाई देते हैं।'

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 मुद्गल, चित्रा (1982) अपनी वापसी: सभांवना प्रका० पृ.सं. 34
- 2 प्रकाश अलका (2008) नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी, :राधा कृष्ण प्रका० पृ.सं. 67
- 3 गोरक्ष थोरात, चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2001, पृष्ठ सं. 94
- 4 के. वनजा, चित्रा मुद्गल एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स— नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ सं. 114
- 5 मुद्गल, चित्रा (1992) जगदम्बा बाबू गाँव आ रहें, : आगरा नेशनल प्रका०

- 6 मुदगल, चित्रा (1986) चर्चित कहानियाँ, : नई दिल्ली सामयिक प्रका०
- 7 मुदगल, चित्रा (1995) मामला आगे बढ़ेगा अभी , : नई दिल्ली प्रभात प्रका०
- 8 मुदगल, चित्रा (1996) जिनावर , : आगरा किताबधर प्रका०
- 9 मुदगल, चित्रा (2002) लपटें, : नई दिल्ली भारतीय ज्ञान पीठ प्रका०
- 10 मुदगल, चित्रा (2001) चर्चित कहानियाँ, : आगरा केंचुल प्रका०
- 11 मुदगल, चित्रा (2001) भूख, : नई दिल्ली प्रभात प्रका०